पाठ 3. भालूवाला

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में भावनाओं पर नियंत्रण संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे उत्तेजित व उद्वेलित करने वाले कारकों से सकारात्मक रूप से निपटने की क्षमता बढ़ा सकें। इस पाठ में लेखक विमल मित्र एक भालूवाले की जीवन दशा का वर्णन करते हैं और यह बताने की चेष्टा करते हैं कि पापी पेट के सवाल पर मनुष्य को क्या नहीं करना पड़ता है। इसके साथ ही, नीलकांत मणि व उसके पुत्र के साथ आत्मीयता की जो झलकियाँ लेखक ने पेश की हैं, वह अंतर्मन को सुकून पहुँचाने वाली हैं।

पाठ का सार

नीलकांत मणि भालू तथा बंदरिया का नाच दिखाकर अपना पेट पालता था। जिस रास्ते पर वह खेल दिखाता था वहीं पर लेखक का मकान था। लेखक के मकान के सामने वाले बगीचे में ही नीलकांत मणि आराम करता था। अकसर वह दुर्गापूजा के बाद ही उस शहर में खेल दिखाने आता था। लेखक तथा नीलकांत मणि बगीचे में बैठकर ढेर सारी बातें करते थे। फरवरी के महीने में नीलकांत मणि ने लेखक से यह कहकर विदा ली कि अब वह अपने लड़के को भेजेगा। काफ़ी समय बाद लेखक फिर से डुगडुगी की आवाज़ सुनता है तथा देखता है कि एक लड़का भालू का खेल दिखा रहा है। लेखक ने उससे नीलकांत मणि के बारे में पूछा तो उस लड़के ने बताया कि वो मेरे पिता थे जो अब नहीं रहे। लेखक उस लड़के तथा भालू और बंदरिया को अपने घर ले जाते हैं। जैसे ही वे घर पहुँचते हैं, लेखक का कुत्ता भालू पर झपट पड़ता है। भालू की खाल हटते ही उसके अंदर से नीलकांत मणि निकल आता है तथा फूट-फूटकर रोने लगता है। उसने बताया कि उसका भालू मर चुका है तथा पैसे ना होने की वजह से वही भालू बन गया है। लेखक ने सौ रुपये नीलकांत मणि को दिए और नया भालू खरीदने को कहा। उसके बाद फिर कभी भी लेखक की नीलकांत मणि से मुलाकात नहीं हुई।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  कहानी के विषय में चर्चा करने से पूर्व इसी तरह के पेशे में लगे लोगों की जीवन स्थितियों की लघु चर्चा करें ताकि कक्षा में इस पाठ के लिए वातावरण बनाने में सहायता मिले। संक्षेप में कहानी के मूल बिंदुओं की चर्चा करें। जिज्ञासा पैदा करने के लिए बच्चों से बीच-बीच में पाठ से संबंधित प्रश्नोत्तर अवश्य करें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 79** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - सर्वनाम की परिभाषा व उसके भेद समझाने के बाद संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण की परिभाषा बताएँ। समान शब्द जैसे–'वह' का भिन्न-भिन्न वाक्यों में प्रयोग करके सर्वनाम व संकेतवाचक विशेषण में अंतर समझाएँ जैसे–**वह** एक बालक है–इस वाक्य में 'वह' सर्वनाम है। **वह** बालक नटखट है।–इस वाक्य में 'वह' संकेतवाचक विशेषण है।

- ❖ पूर्वकालिक क्रिया के बारे में बताएँ कि यह मुख्य क्रिया के पहले ही समाप्त होने वाले कार्य का बोध कराती है। इसी प्रकार प्रेरणार्थक क्रिया के बारे में बताएँ कि इसमें कर्ता स्वयं काम न करके किसी अन्य को प्रेरित करता है।

क्रियाकलाप के लिए संकेत

- ❖ तमाशा दिखाने वाले या सड़क किनारे पटरी पर जीवन गुज़ारने वाले किसी हमउम्र बच्चे से कुछ सवाल पूछें और पूछे गए प्रश्नों व उनके उत्तरों को कॉपी में लिखें। इस परियोजना हेतु कुछ फ़ोटो भी खींचे जा सकते हैं।
- ❖ पेट पालने अर्थात् जीविकोपार्जन की मज़बूरियों के बारे में चर्चा करें। उनकी समस्या के समाधान की चर्चा भी की जा सकती है।